ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

06 November 2024

आदित्य-एल 1 मिशन से सौर विस्फोटों पर महत्वपूर्ण डेटा

सन्दर्भ: भारत का आदित्य-एल1 मिशन, जोकि सितंबर 2023 में सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया, ने अपने प्राथमिक पेलोड, विजिबल एमिशन लाइन कोरोनाग्राफ (वीईएलसी) के माध्यम से उल्लेखनीय वैज्ञानिक परिणाम प्रस्तुत किए हैं।

- वीईएलसी ने कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) के सटीक मापन में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। सीएमई बड़े पैमाने पर सौर विस्फोट होते हैं, जो उपग्रह संचार और इलेक्ट्रॉनिक्स सहित पृथ्वी की तकनीकी प्रणालियों को गंभीर रूप से बाधित कर सकते हैं। यह पेलोड भारतीय खगोल भौतिकी संस्थान (आईआईएपी) द्वारा विकसित किया गया है।

अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान के निहितार्थ:

- आदित्य-एल1 द्वारा एकत्र किए गए डेटा न केवल सौर गतिविधियों के बारे में हमारी समझ को विस्तारित करेगा, बल्कि अंतरिक्ष मौसम की घटनाओं का अधिक सटीक पूर्वानुमान लगाने में भी सहायक होगा।
- पृथ्वी की तरफ उन्मुख कोरोनल मास इजेक्शन (सीएमई) उपग्रह प्रणालियों, जीपीएस नेटवर्क और यहां तक कि विद्युत ग्रिड में भी हस्तक्षेप कर सकते हैं।
- वीईएलसी की इन विस्फोटों को उनकी प्रारंभिक अवस्था में अवलोकन करने की क्षमता के साथ, अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणियां उच्च सटीकता के साथ की जा सकेंगी, जिससे पृथ्वी की तकनीकी प्रणालियों में संभावित व्यवधानों को कम करने के लिए आवश्यक समय उपलब्ध हो जाएगा।

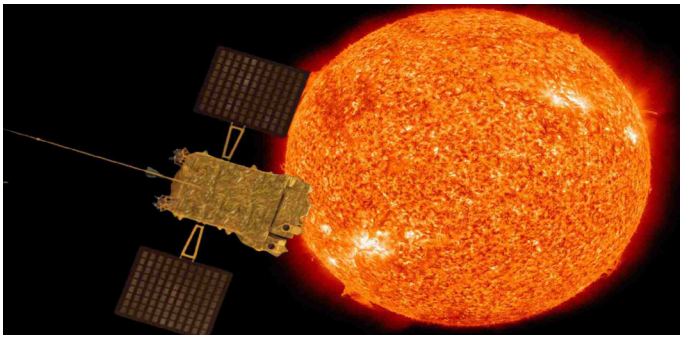

आदित्य-एल 1 मिशन के बारे में:

- आदित्य-एल1 मिशन भारत का अग्रणी अंतरिक्ष-आधारित सौर वेधशाला है, जिसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ISRO) द्वारा 2 सितंबर, 2023 को लॉन्च किया गया।
- इसका मुख्य उद्देश्य सूर्य के ऊपरी वायुमंडलीय गतिशीलता, कोरोनल हीटिंग और सौर वायु त्वरण का अध्ययन करना है। पृथ्वी-सूर्य लैग्रेंज बिंदु (L1) पर स्थित, आदित्य-एल1 सौर घटनाओं की निरंतर निगरानी के लिए आदर्श रूप से स्थित है।

मुख्य उद्देश्य:

- कोरोनल हीटिंग और सौर पवन त्वरण को समझना।
- कोरोनल मास इजेक्शन (CME) और सौर ज्वालाओं की उत्पत्ति का अध्ययन करना।
- सौर वायुमंडल के युग्मन और गतिशीलता का विश्लेषण करना।
- सौर वायु वितरण और तापमान विषमता की जांच करना।

पेलोड:

- दृश्य उत्सर्जन रेखा कोरोनाग्राफ (VELC)
- सौर अल्ट्रा-वायलेट इमेजिंग टेलीस्कोप (SUIT)
- सौर कम ऊर्जा एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (SOLEX)
- उच्च ऊर्जा L1 ऑर्बिटिंग एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर (HEL1OS)
- आदित्य सौर पवन कण प्रयोग (ASPEX)
- आदित्य के लिए प्लाज्मा विश्लेषक पैकेज (PAPA)
- उन्नत त्रि-अक्षीय उच्च-रिजॉल्यूशन डिजिटल मैग्नेटोमीटर (MAG)

महत्व:

- भारत का पहला अंतरिक्ष आधारित सौर मिशन।
- इसरो की वैज्ञानिक क्षमताओं का पृथ्वी की कक्षा से परे विस्तार।
- अंतरिक्ष मौसम पूर्वानुमान क्षमताओं को बढ़ाना।
- सौर भौतिकी और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी में भारत की विशेषज्ञता को आगे बढ़ाना।
- इसरो को विश्व स्तर पर अग्रणी अंतरिक्ष एजेंसियों में स्थान दिलाना।

लैग्रेंजियन बिंदु 1 (L1):

- पृथ्वी और सूर्य के बीच एक गुरुत्वाकर्षण स्थिर बिंदु।
- सूर्य का निर्बाध दृश्य प्रदान करता है।
- सौर अवलोकन और अंतरिक्ष मौसम निगरानी के लिए आदर्श स्थिति प्रदान करता हैं।

प्रथम एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन (एबीएस) 2024

संदर्भ: पहला एशियाई बौद्ध शिखर सम्मेलन (एबीएस) 5-6 नवंबर, 2024 को नई दिल्ली, भारत में आयोजित किया गया।

- **आयोजक:** संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी)।
- **विषय:** "एशिया को मजबूत बनाने में बुद्ध धम्म की भूमिका।"
- **मुख्य अतिथि:** भारत की माननीय राष्ट्रपति मुख्य अतिथि के रूप में

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

भाग लिया।

बुद्ध धम्म का ऐतिहासिक संदर्भ:

- **उत्पत्ति:** बुद्ध धर्म की शुरुआत छठी शताब्दी ईसा पूर्व में सिद्धार्थ गौतम के साथ हुई, जिन्होंने ज्ञान प्राप्त किया और अपनी शिक्षाओं को साझा किया।
- मौर्य सम्राट अशोक (268-232 ईसा पूर्व) ने शांति और सद्भाव के माध्यम से अपने सामाजिक प्रभाव का प्रयोग करते हुए बुद्ध धम्म को पूरे एशिया में फैलाया।
- **विकास:** थेरवाद, महायान और वज्रयान में विभाजन के बाद बौद्ध धर्म उत्तर में मध्य एशिया (उत्तरी शाखा) और पूर्व में दक्षिण पूर्व एशिया (दक्षिणी शाखा) तक फैल गया।

शिखर सम्मेलन के मुख्य विषय:

- **बौद्ध कला, वास्तुकला और विरासत:** सांची स्तूप और अजंता गुफाओं जैसे बौद्ध स्थलों के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व को संरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करना।
- **बुद्ध चारिका (बुद्ध का भ्रमण):** इसमें चर्चा की गई है कि किस प्रकार बुद्ध की भारत यात्रा ने उनकी शिक्षाओं के प्रसार में सहायता की।
- **बौद्ध अवशेषों की भूमिका:** बौद्ध अवशेष पवित्र हैं जोकि भक्ति की प्रेरणा देते हैं, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं।
- **वैज्ञानिक अनुसंधान और कल्याण में महत्व:** यह पता लगाना कि कैसे बुद्ध धम्म की जागरूकता और करुणा की शिक्षाएं आधुनिक वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक कल्याण में योगदान करती हैं।
- **बौद्ध साहित्य और दर्शन:** आधुनिक विश्व के लिए प्राचीन बौद्ध ग्रंथों और उनकी दार्शनिक अंतर्दृष्टि की प्रासंगिकता।

विशेष प्रदर्शनी:

- **प्रदर्शनी का शीर्षक:** 'भारत: एक धम्म के रूप में'। यह प्रदर्शनी एशिया महाद्वीप में बौद्ध शिक्षाओं के प्रसार में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका का उत्सव मनाती है।

बौद्ध संस्कृति और विरासत को बढ़ावा देने के लिए भारत की पहल:

- **बौद्ध पर्यटन सर्किट:** स्वदेश दर्शन के तहत भारत में प्रमुख बौद्ध स्थलों को बढ़ावा देना, जो पर्यटन विकास के लिए एक दर्शन योजना है।
- **वैश्विक बौद्ध शिखर सम्मेलन 2023:** बुद्ध धम्म के माध्यम से सार्वभौमिक मूल्यों के प्रसार और वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने पर केंद्रित।
- **साझा बौद्ध विरासत पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (2022-2023):** एससीओ सदस्य देशों के बीच बौद्ध कला और पुरातात्विक स्थलों में समानताओं का पता लगाया गया।
- **विपश्यना ध्यान पर संगोष्ठी:** कल्याण और वैश्विक शांति के लिए ध्यान के महत्व पर चर्चा की गई।
- **पाली भाषा को शास्त्रीय दर्जा:** बुद्ध धम्म के संरक्षण में इसके महत्व को रेखांकित करते हुए पाली को शास्त्रीय दर्जा प्रदान किया गया।
- **अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस:** अक्टूबर 2024 में एक प्रमुख आयोजन, जिसमें अभिधम्म शिक्षाओं की प्रासंगिकता पर चर्चा की जाएगी।

बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने में भारत की भूमिका:

- भारत आध्यात्मिक अभ्यास और सांस्कृतिक परिसंपत्ति दोनों के रूप में बुद्ध धम्म में वैश्विक रुचि को सक्रिय रूप से बढ़ावा दे रहा है।
- एबीएस 2024 की मेजबानी करके, भारत बौद्ध धर्म के जन्मस्थान और आध्यात्मिक संवाद तथा अंतर-सांस्कृतिक समझ के अग्रणी समर्थक के रूप में अपनी स्थिति को मजबूत करेगा।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR: 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR: 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

ध्येय IAS
most trusted since 2003

DAILY prePARE
Current affairs summary for prelims

06 November 2024

अद्यतन राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजना

सन्दर्भ: हाल ही में भारत ने कोलंबिया के कैली में जैव विविधता पर कन्वेंशन (CBD) के 16वें सम्मेलन (COP 16) के दौरान अपनी अद्यतन राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजना (NBSAP) का अनावरण किया।

- इस महत्वपूर्ण पहल की घोषणा केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री श्री कीर्ति वर्धन सिंह ने की। उन्होंने 'कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क (KMGBF) लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए रोडमैप तथा भारत की अद्यतन राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजना (NBSAP) के विमोचन' विषयक एक विशेष कार्यक्रम में यह घोषणा की।

अद्यतन एनबीएसएपी (राष्ट्रीय जैव विविधता रणनीति और कार्य योजना) के मुख्य उद्देश्य:

- अद्यतन एनबीएसएपी में कई महत्वपूर्ण उद्देश्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई है:
  - **केएमजीबीएफ (कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क) के साथ संरेखण:** इसमें 2030 तक जैव विविधता की हानि को रोकने और 2050 तक प्रकृति के साथ एक स्थायी संबंध को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
  - **संपूर्ण सरकार और संपूर्ण समाज दृष्टिकोण:** यह एकीकृत रणनीति पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सामूहिक कार्रवाई को प्रोत्साहित करती है।

अद्यतन एनबीएसएपी की मुख्य विशेषताएं:

- **पारिस्थितिकी तंत्र की बहाली:** इस योजना में क्षतिग्रस्त पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने, आर्द्रभूमि की रक्षा करने और समुद्री तथा तटीय क्षेत्रों के टिकाऊ प्रबंधन को सुनिश्चित करने को प्राथमिकता दी गई है।
- **प्रजाति पुनरुद्धार कार्यक्रम:** लक्षित संरक्षण प्रयासों का उद्देश्य संकटग्रस्त एवं संकटग्रस्त प्रजातियों के अस्तित्व को बढ़ाना है।
- **समुदाय-संचालित संरक्षण:** स्थानीय समुदायों को संरक्षण पहलों का नेतृत्व करने, जमीनी स्तर पर भागीदारी और प्रबंधन को बढ़ावा देने के लिए सशक्त बनाया जाता है।
- **परिवर्तनकारी दृष्टिकोण:** एनबीएसएपी एक समग्र दृष्टिकोण अपनाता है, जोकि विभिन्न पारिस्थितिक तंत्रों और उनके निवासियों के बीच अंतर्संबंधों को पहचानता है।
- **पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित प्रबंधन:** पारिस्थितिक स्वास्थ्य को सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करने के साथ समग्र रूप से पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन पर जोर दिया जाता है।
- **जैव विविधता को मुख्यधारा में लाना:** विकास के सभी क्षेत्रों में जैव विविधता के विचारों को एकीकृत करना यह सुनिश्चित करता है कि संरक्षण प्रयास राष्ट्रीय नीति का केन्द्रबिन्दु हों।

सहयोगात्मक विकास प्रक्रिया:

- 23 राष्ट्रीय जैव विविधता लक्ष्य स्थापित किए गए हैं, जो कुनमिंग -मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता फ्रेमवर्क (केएमजीबीएफ) के साथ संरेखित हैं। ये लक्ष्य भारत की वैश्विक जैव विविधता लक्ष्यों में योगदान देने के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं

गवर्नेंस ढांचा:

- जैव विविधता संरक्षण के लिए शासन संरचना को 2002 के जैविक विविधता अधिनियम और 2023 में इसके संशोधनों द्वारा सुदृढ़ किया गया है। इसमें निम्नलिखित संस्थाएं शामिल हैं:
  - राष्ट्रीय जैव विविधता प्राधिकरण
  - राज्य जैव विविधता बोर्ड
  - स्थानीय जैव विविधता प्रबंधन समितियां
- यह त्रि-स्तरीय संरचना सभी स्तरों पर जैव विविधता रणनीतियों के प्रभावी कार्यान्वयन को सुनिश्चित करती है, जिसमें पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) केंद्रीय समन्वय एजेंसी के रूप में कार्य करता है।

परिवर्तनकारी दृष्टिकोण पर बल:

- अद्यतन एनबीएसएपी में कई परिवर्तनकारी दृष्टिकोणों पर जोर दिया गया है:
  - **पारिस्थितिकी तंत्र-आधारित प्रबंधन:** पारिस्थितिकी तंत्र के प्रबंधन को समग्र रूप से प्राथमिकता देना।
  - **कार्यान्वयन रणनीतियाँ:** संरक्षण प्रयासों में स्थानीय भागीदारी और स्वामित्व सुनिश्चित करना।
  - **जैव विविधता को मुख्यधारा में लाना:** राष्ट्रीय विकास के सभी क्षेत्रों में जैव विविधता संबंधी विचारों को शामिल करना।
  - **अंतर-एजेंसी सहयोग बढ़ाना:** प्रभावी जैव विविधता प्रबंधन के लिए विभिन्न सरकारी एजेंसियों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाना।

दाना (शीत बूंद) घटना

सन्दर्भ: हाल ही में दक्षिणी और पूर्वी स्पेन में भयंकर मूसलाधार बारिश हुई है, जिसके कारण बाढ़ और व्यवधान पैदा हो गया है। इस बाढ़ ने गांवों और कस्बों को जलमग्न कर दिया है, सड़कें कट गई हैं और वैलेंसिया के पूर्वी क्षेत्र में कई मौतें हो गई। इसका कारण दाना परिकल्पना को बताया जा रहा है।

Face to Face Centres
DELHI MUKHERJEE NAGAR: 9205274741, 42 | LAXMI NAGAR : 9205212500, 9205962002 | RAJENDRA NAGAR: 9205274743 | UTTAR PRADESH PRAYAGRAJ: 0532-2260189, 8853467068 | LUCKNOW (ALIGANJ): 0522-4025825, 9506256789 | LUCKNOW (GOMTI NAGAR): 7234000501, 7234000502 | GREATER NOIDA: 9205336037, 38 | KANPUR: 7887003962, 7897003962 | GORAKHPUR : 7080847474, 9161947474 | ODISHA BHUBANESWAR: 9818244644/7656949029
dhyeyaias.com

- बारिश असाधारण हुई; कुछ इलाकों में एक ही दिन में एक महीने से अधिक के बराबर की बारिश हुई। दक्षिणी क्षेत्र अंडलुसिया में अक्टूबर के लिए औसत बारिश से चार गुना अधिक वर्षा दर्ज की गई।

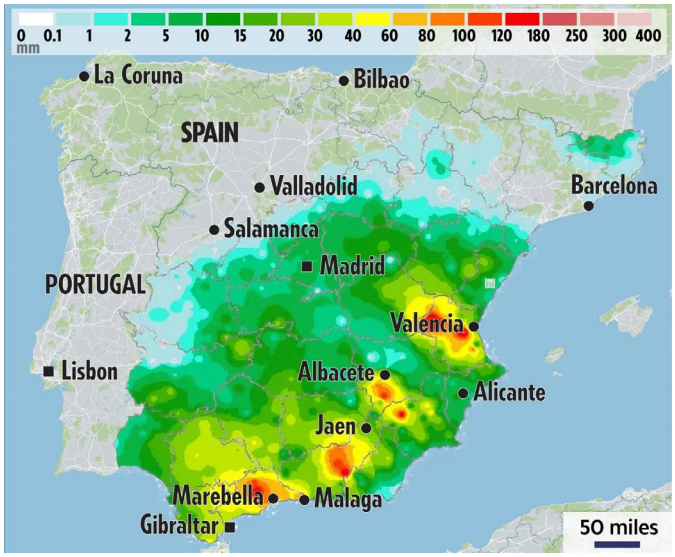

दाना (डेप्रेशन ऐस्लाडा एन निवेल्स अल्टोस– DANA):

- डेप्रेशन ऐस्लाडा एन निवेल्स अल्टोस (DANA), जिसे सामान्यत: 'शीत बूंद' के रूप में संदर्भित किया जाता है। पश्चिमी भूमध्यसागरीय क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण मौसम संबंधी घटना है, जोकि विशेष रूप से स्पेन और पुर्तगाल को प्रभावित करती है, हालांकि यह इटली, फ्रांस और भूमध्य सागर के आसपास के अन्य क्षेत्रों को भी प्रभावित कर सकती है।
- शब्द "DANA" स्पेनिश मौसम वैज्ञानिकों द्वारा इस मौसम पैटर्न का वर्णन करने के लिए विशेष रूप से गढ़ा गया था, जिसकी विशेषता तीव्र वर्षा और बाढ़ है।
- DANA तब होता है जब ध्रुवीय क्षेत्रों से आने वाली ठंडी हवा ध्रुवीय जेट स्ट्रीम से अलग होकर गर्म भूमध्य सागर के ऊपर उतरती है। यह परस्पर क्रिया ऊँचाई पर ठंडी हवा और सतह के पास की गर्म, नम हवा के बीच एक असंगता पैदा करती है, जिससे वायुमंडलीय अस्थिरता उत्पन्न होती है।
- परिणामस्वरूप, यह अस्थिरता क्यूम्यलोनिम्बस बादलों और तीव्र तूफानों के तेजी से निर्माण को बढ़ावा देती है, जिसके परिणामस्वरूप अक्सर महत्वपूर्ण वर्षा होती है।

निष्कर्ष:

स्पेन में आई बाढ़ जलवायु परिवर्तन की जटिलताओं और मौसम प्रणालियों पर इसके गहरे प्रभाव को स्पष्ट करती है। जैसे-जैसे चरम मौसम की घटनाएँ अधिक होती जा रही हैं, नीति निर्माताओं और समुदायों के लिए ऐसे जोखिमों को कम करने के लिए प्रभावी उपाय विकसित करना अनिवार्य हो गया है।

पॉवर पैक्ड न्यूज

अभ्यास वज्र प्रहार

भारत और अमेरिका स्पेशल फोर्सेज के संयुक्त सैन्य अभ्यास वज्र प्रहार की 15वीं कड़ी 2 से 22 नवंबर 2024 तक अमेरिका के इडाहो में ऑर्चर्ड कॉम्बैट ट्रेनिंग सेंटर में आयोजित किया जा रहा है। इसी तरह का पिछला अभ्यास दिसंबर 2023 में उमरोई, मेघालय में आयोजित किया गया था। यह भारतीय और अमेरिकी सेना के बीच वर्ष का दूसरा अभ्यास होगा, पिछला अभ्यास 'युद्ध अभ्यास 2024' था, जो सितंबर 2024 में राजस्थान में आयोजित किया गया था।

अभ्यास वज्र प्रहार के बारे में:

- **पहला संस्करण:** इस संयुक्त अभ्यास का पहला संस्करण 2010 में आयोजित किया गया था।
- **13वां संस्करण:** भारत-अमेरिका संयुक्त विशेष सैन्य अभ्यास का 13वां संस्करण बकलोह (हिमाचल प्रदेश) के विशेष बल प्रशिक्षण केंद्र में आयोजित किया गया था।

भारत-अमेरिका के मध्य अन्य सैन्य अभ्यास

- **थल सेना:**
  - वज्र-प्रहार (Joint Special Forces Exercise)
  - युद्ध अभ्यास (Yudh Abhyas)
- **वायु सेना:**
  - कोप इंडिया (Cope India)
- **अमेरिका का बहुपक्षीय वायु सेना अभ्यास:**
  - रेड फ्लैग (Red Flag)

- **नौसेना:**
  - » पैसेज (Passage Exercise)
- **त्रिपक्षीय अभ्यास:**
  - » मालाबार अभ्यास (Malabar Exercise) – भारत, अमेरिका और जापान के बीच।

अभ्यास गरुड़ शक्ति

- अभ्यास का यह नौवां संस्करण 1 से 12 नवंबर, 2024 तक इंडोनेशिया के जकार्ता के सिजंटुंग में आयोजित किया जा रहा है और इसमें भारतीय सेना की पैराशूट रेजिमेंट (विशेष बल) के 25 कर्मी और इंडोनेशियाई विशेष बल कोपासस के 40 कर्मी शामिल हैं।
- अभ्यास गरुड़ शक्ति भारत और इंडोनेशिया के बीच एक द्विपक्षीय संयुक्त विशेष बल अभ्यास है, जिसका उद्देश्य सैन्य सहयोग को बढ़ाना है।

उद्देश्य:

- » **आपसी समझ बढ़ाना:** भारत और इंडोनेशिया के विशेष बलों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना।
- » **सर्वोत्तम अभ्यास साझा करना:** आतंकवाद-रोधी अभियानों में अनुभवों का आदान-प्रदान करना।
- » **अंतर-संचालन में सुधार करना:** संयुक्त अभियान और अभ्यास करना।

- यह अभ्यास भारत और इंडोनेशिया के बीच रक्षा सहयोग में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसकी शुरुआत 2012 में हुई थी। इस संयुक्त अभ्यास में भाग लेकर, दोनों देशों का उद्देश्य क्षेत्र में शांति और स्थिरता को बढ़ावा देना है।

भारत अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का अध्यक्ष बना

- भारत को 2026 तक दो साल के कार्यकाल के लिए अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (ISA) का अध्यक्ष चुना गया है, जिसमें फ्रांस सह-अध्यक्ष है। यह मील का पत्थर सौर ऊर्जा में भारत की उल्लेखनीय प्रगति को रेखांकित करता है, जिसने 2014 में 2 GW से अपनी क्षमता का विस्तार करके आज 90 GW कर लिया है।
- आईएसए में भारत का नेतृत्व वैश्विक सौर ऊर्जा प्रयासों को बढ़ावा देने में मदद करेगा, प्रौद्योगिकी और सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देगा। 2025 में डॉ. अजय माथुर की जगह आशीष खन्ना आईएसए के महानिदेशक बनेंगे, जिससे आईएसए का वैश्विक प्रभाव मजबूत होगा।
- आईएसए की स्थापना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद ने 30 नवंबर, 2015 को की थी। आईएसए का उद्देश्य सौर ऊर्जा को बढ़ाना, सौर वित्त, प्रौद्योगिकियों, नवाचार, अनुसंधान और विकास और क्षमता निर्माण की मांग के एकत्रीकरण के माध्यम से सौर ऊर्जा उत्पादन की लागत को कम करना है। आईएसए का मुख्यालय हरियाणा, भारत में है।